02

आज समाज

www.aajsamaaj.com

04

नई दिल्ली, पृष्ठ-04, मंगलवार, 1 नवंबर, 2022

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र

विक्रमी संवत 2079, अमांत-कार्तिक, शुक्ल पक्ष अष्टमी, मूल्य, 2.00 रुपए

धर्म के अनुसरण से जीवन होगा सार्थक: डॉ. कांत

आज समाज नेटवर्क

बल्लभगढ़। अग्रवाल महाविद्यालय बल्लभगढ़ में सेमवार को संस्कृत विभाग एवं हरियाणा संस्कृत अकादमी पंचकूला (हरियाणा) के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसका विषय था वर्तमान परिप्रेक्ष्ये श्रीमद्भगवद्गीतायाः योगदान (वर्तमान परिपेक्ष्य में श्रीमद्भागवत गीता का योगदान)। अग्रवाल महाविद्यालय प्राचार्य एवं संगोष्ठी संरक्षक डॉ. कृष्ण कांत गुप्ता के मार्गदर्शन में यह संगोष्ठी सफलतापूर्वक संपन्न हुई। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. कमला भारद्वाज (भूतपूर्व संस्कृत व्याकरण विभागाध्यक्षा, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) अध्यक्ष देव प्रसाद भारद्वाज (प्रांतीय अध्यक्ष विद्या भारती) विशिष्ट अतिथि डॉ. दिनेश कुमार शास्त्री (निदेशक, हरियाणा संस्कृत अकादमी) मुख्य बीज वक्ता डॉ. कामदेव झा (प्राचार्य डीएवी कॉलेज, पिहोवा) उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. कृष्णकांत गुप्ता ने की। कार्यक्रम का प्रारंभ दीपशिखा प्रज्ज्वलन एवं पौधा देकर अतिथियों के सत्कार के साथ हुआ। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. कृष्ण कांत गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा गीता के प्रत्येक अध्याय में योग है। पूर्ण मनोयोग से सफलता निश्चित है।प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान गीता में है। मंच संचालन डॉ. रेनू माहेश्वरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम संयोजिका डॉ. पूजा सैनी (संस्कृत विभागाध्यक्ष) ने कार्यक्रम की थीम प्रस्तुति की। मुख्य अतिथि प्रोफेसर कमला भारद्वाज ने अपने वक्तव्य में कहा कि गीता पथ प्रदर्शक है। अतः संसार के प्रत्येक क्षेत्र में गीता की प्रासंगिकता है। उन्होंने निष्काम भाव से कर्म और अभ्यास व परिश्रम को ही योग बीज वक्ता डॉ. कामदेव झा ने लौह पुरूष वल्लभ भाई पटेल एवं छठ पर्व की बधाई देते हुए कहा कि गीता की उपयोगिता मरने से पहले और बाद में भी समान रूप से है। उन्होंने गीता का सभी विषयों से समन्वय प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों को अवसाद से बचने, क्रोध पर नियंत्रण रखने और अपना उद्धार स्वंयम करने को कहा। कार्यक्रम के अन्य वक्ता डॉ. सतीश चंद्र शर्मा ने गीता को सर्वोत्तम मनाते हुए कहा कि भारत भूमि हिन्दू धर्म की मातृ भूमि आदि अनादि काल से रही है। प्रत्येक मनुष्य की धर्म का आचरण करना चाहिए। उद्घाटन सत्र में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के उपलक्ष में सभी को शपथ दिलाई गई। अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर कल्याण मंत्र के साथ उद्घाटन सत्र की समाप्ति हुई। तत्पश्चात दो तकनीकी सत्र हुए। प्रथम सत्र में डॉ. अशोक कुमार मिश्रा (वरिष्ठ प्रवक्ता ,आदर्श महाविद्यालय अंबाला) अध्यक्ष रहे और मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सतीश चंद्र शर्मा (भूतपूर्व प्राचार्य ,हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ बघोला, पलवल) थे। इसके साथ-साथ शोधार्थियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए । समापन सत्र में अध्यक्ष रूप में डॉ. कामदेव झा प्रचा[illegible] (पिहोवा)थे।

दीप प्रज्जवल के दौरान सभी एक साथ। आज समाज